घर आये मोरे राम रघुराई | By Tarang Nagi

चौदह बरस का वनवास है बीता
फिर सर जो मुस्काई
घर आये मोरे राम रघुराई
घर आये मोरे राम रघुराई
माई कौशल्या गाये सोहर
जन जन अब गुनगुनाई
घर आये मोरे राम रघुराई
घर आये मोरे राम रघुराई

राम राम मेरे घर आये
राम राम मेरे घर आये

सपने होंगे अब सब पूरे
राम लला घर आये हैं
कनक भवन की सूनी गलियां
फिर से खिलखिलाई हैं
देखो ठुमक कर चले राम जी
पावस ऋतू कोई आई
घर आये मोरे राम रघुराई
घर आये मोरे राम रघुराई

हर्षे जन जन गाये बधैया
खेले गुलाल सिया जलाये फुलझड़िया
साकेत नगर का कण कण हर्षे
हर पल ये गीत गाई
घर आये मोरे राम रघुराई
घर आये मोरे राम रघुराई

राम राम मेरे घर आये
राम राम मेरे घर आये

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%98%e0%a4%b0-%e0%a4%86%e0%a4%af%e0%a5%87-%e0%a4%ae%e0%a5%8b%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%b0%e0%a4%98%e0%a5%81%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%88-by-tarang-nagi/